IJCRT.ORG ISSN : 2320-2882

INTERNATIONAL JOURNAL OF CREATIVE RESEARCH THOUGHTS (IJCRT)

An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

'विज़न' : सामाजिक, नैतिक एवं सांस्कृतिक अंतर्विरोधों का समीक्षात्मक अनुशीलन

डॉ.अनूपा कृष्णन[1],असिस्टेंट प्रोफेसर ,महात्मा गाँधी कॉलेज ,तिरुवनंतपुरम,केरला (केरल विश्वविद्यालय से सम्बद्ध)

Abstract: **प्रस्तुत शोध-लेख में मैत्रेयी पुष्पा के उपन्यास 'विज़न' का सामाजिक, नैतिक एवं सांस्कृतिक अंतर्विरोधों की दृष्टि से समीक्षात्मक अनुशीलन किया गया है। अध्ययन का प्रमुख उद्देश्य यह स्पष्ट करना है कि लेखिका ने चिकित्सा-जगत को कथानक का केंद्र बनाकर समकालीन भारतीय समाज की बहुआयामी समस्याओं—जैसे मरीजों का शोषण, नारी-उत्पीड़न, बेरोजगारी, मूल्य-विघटन, अकेलापन, अमानवीयता तथा विवाह-संस्था के अंतर्विरोध—को किस प्रकार यथार्थपरक रूप में अभिव्यक्त किया है।पाठ-विश्लेषण पद्धति के माध्यम से उपन्यास के प्रमुख प्रसंगों, पात्रों एवं संवादों का आलोचनात्मक अध्ययन किया गया है। डॉ. अजय की लापरवाही से प्रो. विकास चंद्र की मृत्यु तथा डॉ. अनुज द्वारा सरोज के साथ किया गया दुष्कर्म चिकित्सा-व्यवस्था में व्याप्त नैतिक पतन और सत्ता-संरक्षित अन्याय को उद्घाटित करते हैं। डॉ. आभा और डॉ. नेहा के चरित्रों के माध्यम से शिक्षित स्त्री की मनोवैज्ञानिक त्रासदी, लैंगिक असुरक्षा तथा पेशेवर संघर्ष को रेखांकित किया गया है।इसके अतिरिक्त, नियुक्ति-प्रक्रिया में भ्रष्टाचार और राजनीतिक हस्तक्षेप के चित्रण द्वारा प्रतिभा के अवमूल्यन तथा संस्थागत विडंबनाओं को उजागर किया गया है। विवाह संस्था के संदर्भ में पारंपरिक मूल्यों और आधुनिक चेतना के मध्य द्वंद्व को भी विश्लेषित किया गया है।अतः निष्कर्षतः 'विज़न' को समकालीन सामाजिक यथार्थ का सशक्त प्रतिनिधि उपन्यास कहा जा सकता है, जो न केवल सामाजिक विसंगतियों को उद्घाटित करता है, बल्कि नैतिक आत्ममंथन की आवश्यकता की ओर भी संकेत करता है।**

Index Terms - **विज़न, मैत्रेयी पुष्पा, सामाजिक यथार्थ, नारी-चेतना, चिकित्सा-नैतिकता, मूल्य-विघटन, समकालीन हिंदी उपन्यास।**

I. INTRODUCTION

मैत्रेयी पुष्पा का उपन्यास विज़न समकालीन भारतीय समाज की बहुआयामी समस्याओं का सशक्त प्रतिनिधि पाठ है। इस कृति में सामाजिक, आर्थिक, नैतिक, लैंगिक तथा मानवीय मूल्यों के विघटन से संबंधित विविध प्रश्नों का यथार्थपरक चित्रण किया गया है। लेखिका ने चिकित्सा-जगत को कथानक का केंद्र बनाकर समाज में व्याप्त भ्रष्टाचार, शोषण, बेरोजगारी, अकेलापन, अमानवीयता तथा नैतिक अवनति को उजागर किया है।

मरीजों का शोषण एवं नारी शोषण

उपन्यास में चिकित्सा-क्षेत्र में व्याप्त अनियमितताओं और शोषण की प्रवृत्तियों को अत्यंत गंभीरता से प्रस्तुत किया गया है। डॉ. अजय द्वारा गलत इंजेक्शन दिए जाने के कारण प्रो. विकास चंद्र की मृत्यु हो जाती है, जो चिकित्सा-व्यवस्था में उत्तरदायित्व हीनता का प्रमाण है।[1]

इसके साथ ही, नारी-शोषण की समस्या भी उपन्यास का केंद्रीय तत्व है। डॉ. नेहा और डॉ. आभा जैसे शिक्षित एवं सक्षम स्त्री-पात्रों के माध्यम से यह प्रतिपादित किया गया है कि पेशेवर दक्षता के बावजूद स्त्री को लैंगिक उत्पीड़न और सामाजिक असुरक्षा का सामना करना पड़ता है। सरोज के साथ डॉ. अनुज द्वारा किया गया बलात्कार इस संदर्भ में विशेष रूप से उल्लेखनीय है।[2]

लेखिका ने स्पष्ट किया है कि आर्थिक एवं सामाजिक दबावों के कारण पीड़िता न्याय की प्रक्रिया में पीछे हट जाती है—"यह बलात्कार अनुज ने किया, तो पीछे हटने का गुनाह सरोज ने किया।"[3]

नौकरी एवं बेरोजगारी की समस्या

आधुनिक समाज में बेरोजगारी तथा नियुक्ति-प्रक्रिया में व्याप्त भ्रष्टाचार एक गंभीर समस्या है। उपन्यास में डॉ. आभा को विशेषज्ञ पद प्राप्त करने हेतु संघर्ष करना पड़ता है। वह अपने वरिष्ठ अधिकारी के पुत्र के लिए शोध-पत्र तैयार करती है, तथापि उसे नियुक्ति नहीं मिलती—"डॉ. आभा के चार साल बेकार गए। बाद में भी पोस्ट नहीं मिली।"[4]

डॉ. आलोक भी योग्य होने के बावजूद नियुक्ति से वंचित रहता है। वह विभिन्न नेत्र-चिकित्सा केंद्रों में 'घोस्ट डॉक्टर' के रूप में कार्य करने को विवश है।[5] नियुक्ति-प्रक्रिया में राजनीतिक हस्तक्षेप और धन-प्रदान की प्रवृत्ति को इस कथन से स्पष्ट किया गया है—"पेपर दो, पोस्ट लो, सीधा सौदा है। मंत्री लिस्ट लिए बैठा है।"[6]यह स्थिति प्रतिभा के अवमूल्यन तथा व्यवस्था की विडंबना को उद्घाटित करती है।

अकेलेपन की समस्या

अकेलापन आधुनिक जीवन की एक गंभीर मानसिक समस्या है। डॉ. आभा का दांपत्य-विच्छेद तथा उसके पश्चात् स्वतंत्र जीवन बाह्य रूप से आत्मनिर्भरता का प्रतीक है, किंतु अंतर्मन में वह गहरे एकांत से ग्रस्त है। वह कहती है—"वे संबंध, वे प्यार के तंतु जुड़ते ही क्यों हैं, जिन्हें टूटना होता है।"[7]

इसी प्रकार डॉ. नेहा भी ससुराल में उपेक्षा और अस्वीकार के कारण मानसिक अकेलेपन का अनुभव करती है—"मैं पिता के घर में भी अकेली और पति के घर में भी अकेली! विवाह होता है एक से दो हो जाने के लिए, मगर विवाह की उलटी-पुलटी शर्तें...।"[8] लेखिका ने इन पात्रों के माध्यम से आधुनिक नारी की मनोवैज्ञानिक त्रासदी को अभिव्यक्ति दी है।

शारीरिक शोषण

उपन्यास में बलात्कार जैसी जघन्य सामाजिक समस्या का चित्रण किया गया है। मेडिकल कॉलेज में उपचार हेतु आई सरोज के साथ डॉ. अनुज वर्मा द्वारा किया गया दुष्कर्म सत्ता-संरक्षित अन्याय का उदाहरण है।

डॉ. आभा द्वारा प्राथमिकी दर्ज कराई जाती है, किंतु प्रभावशाली परिवार से होने के कारण अपराधी दंड से बच निकलता है।[9] यह प्रसंग न्याय-प्रणाली की सीमाओं तथा स्त्री-असुरक्षा की स्थिति को रेखांकित करता है।

विवाह से उत्पन्न समस्याएँ

भारतीय समाज में विवाह को पवित्र संस्था माना जाता है, किंतु आधुनिक संदर्भ में यह संस्था अनेक अंतर्विरोधों से ग्रस्त दिखाई देती है। आभा विवाह को अपनी शिक्षा एवं स्वतंत्रता में बाधक मानती है, जबकि उसके पिता सामाजिक दृष्टिकोण से उचित समय पर विवाह की आवश्यकता पर बल देते हैं—"विवाह का अपना समय होता है बेटी, उम्र होती है लड़की की भी, माँ-बाप की।"[10]

इस प्रकार विवाह संस्था के भीतर पारंपरिक मान्यताओं और आधुनिक चेतना का संघर्ष दृष्टिगत होता है।

अमानवीयता की समस्या

उपन्यास में महानगरीय जीवन की संवेदनहीनता का सजीव चित्रण किया गया है। "महानगर का मानव मानवीयता से तलाक लिए हुए है और छोटा शहर का मानव मानवीयता के लिए तरसता है।"[11]

आभा के पिता महानगर और छोटे नगर के जीवन का अंतर स्पष्ट करते हुए बताते हैं कि छोटे शहरों में अभी भी पारस्परिक संवेदनाएँ जीवित हैं।[12]यह प्रसंग आधुनिकता के साथ बढ़ती अमानवीयता को रेखांकित करता है।

डॉक्टरों के मूल्य-विघटन की समस्या

चिकित्सा-व्यवसाय को परंपरागत रूप से सेवा-धर्म माना गया है, किंतु उपन्यास में यह क्षेत्र भी व्यावसायिकता और नैतिक पतन से ग्रस्त दिखाई देता है।

"व्यक्ति अर्थ कमाने में इतना अनैतिक हो गया है कि उसकी मानवीय संवेदना जैसे समाप्त हो गई है।"[13]

डॉक्टरों द्वारा अनावश्यक धन-वसूली, लापरवाहीपूर्वक ऑपरेशन तथा आवश्यक संसाधनों की अनदेखी—ये सभी घटनाएँ चिकित्सा-क्षेत्र में मूल्य-विघटन का संकेत देती हैं। प्रो. विकास चंद्र की मृत्यु तथा अन्य मरीजों की असामयिक मृत्यु इस नैतिक पतन का परिणाम है।

इस प्रकार विज़न उपन्यास समकालीन भारतीय समाज की जटिल समस्याओं का सशक्त दस्तावेज है। मैत्रेयी पुष्पा ने चिकित्सा-जगत को केंद्र में रखकर सामाजिक विषमता, लैंगिक अन्याय, बेरोजगारी, विवाह-संकट, अकेलापन, अमानवीयता तथा नैतिक मूल्यों के पतन का यथार्थ चित्रण किया है। यह कृति न केवल समस्याओं का अनावरण करती है, बल्कि समाज को आत्ममंथन हेतु प्रेरित भी करती है।

सहायक ग्रन्थ

1. मैत्रेयी पुष्पा, विज़न , 35।
2. वही, 166।
3. वही, 166।
4. वही, 159।
5. वही, 159।
6. वही, 159।
7. वही, 121।
8. वही, 153।
9. वही, 166।
10. वही, 90।
11. अर्जुन चव्हाण, संपा., आधुनिक हिंदी कालजयी साहित्य (नई दिल्ली: प्रकाशक, वर्ष), 204।
12. मैत्रेयी पुष्पा, विज़न, 119।
13. मोहिनी शर्मा, हिंदी उपन्यास और जीवन मूल्य 161।

सन्दर्भ ग्रन्थ

1.अंतरेड्डी, सुलोचना एन. - मैत्रेयी पुष्पा और शांता गोखले की नारी दृष्टि, कानपुर: अमन प्रकाशन, 2010।
2, भारती, धर्मवीर- मानव मूल्य और साहित्य, वाराणसी: मंत्री प्रकाशन, 1968।
3, कालिया, ममता- नई सदी की पहचान, इलाहाबाद: लोकभारती प्रकाशन, 2002।
4,माम्मन, वी. वी.- स्वातंत्र्योत्तर हिंदी उपन्यास और आधुनिकता-बोध, मथुरा: जवाहर प्रकाशन, 2006।
4.मोहनन, एन. -समकालीन हिंदी उपन्यास, नई दिल्ली: वाणी प्रकाशन, 2013।
5.नगेंद्र, संपा. -हिंदी साहित्य का इतिहास, नई दिल्ली: नेशनल पब्लिशिंग हाउस, 2006।
पुष्पा, मैत्रेयी- विज़न. नई दिल्ली: वाणी प्रकाशन, 2002।
6.शर्मा, मोहिनी-हिंदी उपन्यास और जीवन मूल्य, जयपुर: साहित्यागार प्रकाशन, 1986।
7.यादव, उषा- हिंदी की महिला उपन्यासकारों की मानवीय संवेदना, नई दिल्ली: राधाकृष्ण प्रकाशन, 1999।
8.यशवंत, शोभा- मैत्रेयी पुष्पा के कथा साहित्य में नारी जीवन, कानपुर: विकास प्रकाशन, 2009।